अंतराष्ट्रीय बाल भवन (एम. यू. एन)

बदलती जल वायु से मानव जीवन पर पड़ता प्रभाव

निरंजन कार्तिक, आदितय विरहा

प्रत्येक देश की जल वायु में क्षेत्रीय विविधता रहती है किन्तु वर्तमान में विश्व भर में जलवायु में परिवर्तन आ रहा है। पृथ्वी के वायु मंडल में ग्रीन हाऊस गैसों की सघनता ने लगातार वृद्धि हो रही है।

प्राकृतिक पर्यावरण और जलवायु परिर्वतन से जुड़ी समस्याओं पर विद्यालय के नवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने गहन अध्ययन किया तथा विश्व के अनेक देशों का प्रतिनिधित्व कर पर्यावरण एवं जलवायु परिर्वतन से मानव जीवन पर पड़ते प्रभावों का उल्लेख किया।

आर्थिक विकास, बढ़ती जनसंख्या, शहरी करण, औद्योगीकरण के अनियंत्रित वृद्धि जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

अलजीरीया : बिन पानी सब सून

अलजीरीया के प्रतिनिधि ने पानी को मुद्दा बना कर वहाँ की सरकार द्वारा उठाये गये कदमों का उल्लेख किया। अलजीरीया ने औद्योगिक क्षेत्र में होने वाले कार्यों पर विशेष ध्यान देकर उसके कारण पर्यावरण में जो हानी हो रही हे उस पर भी विशेष कार्य किया, उसके लिए उन्होने कुछ नियम भी बनाये हैं जो जलवायु की सुरक्षा के लिये हैं। इसके साथ ही खारे पानी को मीठे पानी में बदलने के सराहनीय प्रयास भी इनके द्ववारा किया गया है।

नियमों का पालन

जापान के प्रतिनिधि ने कहा है कि **जापान पर परमाणु शस्त्र का प्रयोग होने के कारन पर्यावरण पर गहरा असर पड़ा है** इतिहास ठीक नहीं रहा है जिसके कारण पर्यावरण पर गहरा असर पड़ा है। यही कारण रहा कि उन्होनें 1970 में 14 नियम बनाये जो कि पास भी हुए, यह नियम वायु प्रदूषण को ध्यान में रखकर बनाए गए जिनका आज भी पालन हो रहा है।

हरयाली को समृद्धि का प्रतीक माना

ग्रीस के प्रतिनिधि ने मानव जीवन पर बढ़ते हुए प्रभाव को विशेष रूप से महत्व देकर कहा की ग्रीस ने अपनी जमीन चार देशों के साथ सांझा की तथा 63.4 % कृषि के लिये तथा 30.5 % जंगलों को आवंटित की है जिससे जलवायु का चक्र मानव जीवन को प्रभावित न कर सके अनुकूल प्राकृतिक संसाधनो का असतित्व बना रहे।

अन्ततः सभा के अध्यक्ष उपाध्यक्ष ने सभी देशों के विचारों को जानकर यह निर्णय लिया की जहां विनाश है वहां विकास भी है तो विकास को ध्यान में रखकर हमें जलवायु के चक्र को व्यवस्थित बनाए रखनें के लिए प्रयासरत एवं जागरूक होना चाहिए।